‘गीत का कमाल’–भाषा कक्षा में लोक कथा

– खजान सिंह

लोक कथाएं चाहे मौखिक रूप में सुनाई जाए चाहे इस तरह की सचित्र किताब के रूप में वे कक्षा में गजब का प्रभाव छोडती हैं साथ ही बच्चों को सोचने व बातचीत करने की अथाह संभावनाए खोलती हैं। इससे भाषाई उद्देश्य तो पूरे होते ही हैं और भी बहुत से कौशल मजबूत होते हैं मसलन कल्पना करना, सोचना, अभिव्यक्ति, तर्क, कहानी की संरचना इत्यादि।

एक गांव में एक औरत थी जो कभी गाती न थी। गांव की सारी औरतें चक्की चलाते हुए या कुंए पर जाते हुए गाती रहती थीं। पर वह चुप रहती। गाना तो वह भी चाहती थी पर उसे कोई गीत आता ही नहीं था। एक दिन इस औरत ने अपनी पड़ोसन पूछा "सखी' तुम सारा समय गाती कैसे रहती हो? तुमने इतने सारे गीत कहां से सीखे?" "अरे–अरे...." उसकी पड़ोसन ने मजाक में कहा, "यह तो बहुत आसान है। गाने तो बाजार में बिकते हैं, बने बनाए। मैं तो जब–तब लेती रहती हूं। तुम भी जाकर खरीद लाओ।" यह सुनकर औरत बड़ी खुश हुई। जब उसका पति घर लौटा तो उसने कहा, "जल्दी करो! बाजार जाकर मेरे लिए कुछ गीत खरीद लाओ।" "मैंने तो वहां गीत बिकते नहीं देखे।" उसके पति ने आश्चर्य से कहा। "पर मैं जाकर देखता हूं। मुझे पांच रूपये दो, मैं एक बेहतरीन गाना लेकर आता हूं।" वह पैदल–पैदल बाजार चला और सबसे पहली दूकान पर जा पहुंच। वहां अनाज बिकता था। उसने दुकानदार की तरफ पैसे बढ़ाए और कहा, "एक बढ़िया सा गीत देना भाई।" दुकानदार ने मसखरी से अपने बेटे को आंख मारी और कहा, "ओहो मेरे तो सारे गीत बिक गए। ऐसा करो, सब्जी वाले के पास देख लो।" वह सब्जी वाले के पास पहुंचा। "गीत तो नहीं है उसके कहा। कपडे वाले का भी यही हाल था... इस तरह वह सारी दोपहर एक दूकान से दूसरी दूकान भटकता रहा। पर एक भी गीत नहीं खरीद सका. आखिरकार दुःखी मन से घर की ओर लौटने लगा।

रास्ते में उसे एक बिल खोदता चूहा दिखा। इससे उसके मन में एक विचार आया। "मैं खुद ही एक गीत बना लेता हूँ। जिसमें यह चूहा होगा और हो गया शुरू खोदे खरड़–खरड़ और इसे कई बार गता चला गया। आगे

उसे एक सांप रेंगता दिखाई दिया और उसने गीत में जोड़ा सरके सरर–सरर अब वह फिर गता चला खोदे खरड़–खरड़, सरके सरर–सरर। इतने में उसे एक खरगोश दिखा जो झड़ी के पीछे से झांक रहा था और वह बोल उठा– देखे टगर–मगर। अब उसका गीत लगभग बन ही गया था। जब उसने कुछ हिरनों को कुलांचे भरते देखा तो उसके मुह से निकला– कूदे डगर–डगर। अब गीत पूरा हो गया था।

खोदे खरड़–खरड़, सरके सरर–सरर
देखे टगर–मगर, कूदे डगर–डगर.

घर लौट कर उसने वह गीत अपनी पत्नी को सुनाया और बोला यह सबसे महंगा गीत है... वह बहुत खुश होकर यह गीत गाने लगी... उसे रात को भी नींद नहीं आयी तो चक्की पिसना शुरू किया साथ ही साथ वह गीत भी गाती जाती। उसी समय चार चोर उनके घर की दीवार में सेंध लगा रहे थे। उन्होंने उसे गाते सुना। खोदे खरड़–खरड़। वे ठिठक गए। कुछ देर वाद उन्हें लगा की सब ठीक है तो वे सरकते हुए अन्दर घुसने लगे। तभी उस औरत ने गाया सरके सरर–सरर। चोर हडबडा गए। "औरत को कैसे मालुम कि हम अन्दर गुस रहे हैं।" वे घबराकर इधर

उधर देखने लगे। औरत गाने में मगन थी। देखे टगर–मगर "बाप रे उसने जरूर देख लिया है," चोरों ने सोचा" अब भागने में ही भलाई है।" इधर वे दीवार कूद कर भाग रहे थे उधर उस औरत ने आखरी पंक्ति गाई– कूदे डगर डगर। यह सुनकर चोर बेतहाशा भागे। उन्होंने कसम खाई की इस घर में कभी चोरी नहीं करेंगे।

औरत को तो पता नहीं चला कि उसके गाने ने क्या कमाल कर दिया....सुबह जब उसका पति जागा तो उसे चोरों का कारनामा पता चला। उसने पत्नी से पूछा "कल रात तुम क्या कर रही थी?.... उसने कहा "मैं तो गीत का रियाज कर रही थी जो तुम लाए थे।" "वाह"...वह कमाल का गीत है। उसने चोरों को भगा दिया। औरत मुस्करा दी और कहा" तुम सचमुच मेरे लिए सबसे अच्छा गीत लाए हो। दोनों ने चाय बनाकर पी और पूरे गांव को यह बताने चल दिए कि सही वक्त पर सही गीत गाने से कैसा कमाल हो सकता है।

यह एक बुन्देलखंडी लोक कथा है जिसे सुन्दर रूप और चित्रों के साथ छापा है एकलव्य प्रकाशन भोपाल ने। एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है इसका चित्रांकन जितेन्द्र ठाकुर ने किया है। इसका मूल्य मात्र 70 रुपये हैं।

लोक कथाएं चाहे मौखिक रूप में सुनाई जाए चाहे इस तरह की सचित्र किताब के रूप में वे कक्षा में गजब का प्रभाव छोडती हैं। हमने अज़ीम प्रेमजी स्कूल मतली उत्तरकाशी में (आज 14 फरवरी–2017) कक्षा चार की भाषा कक्षा में जो प्रमोद कांडपाल ले रहे थे। इसको बरतते देखा। प्रमोद ने इसके आवरण पेज पर बच्चों से खूब बातचीत की इससे बच्चों की जिज्ञासा बढ़ती चली गयी और आगे सुनने का आग्रह करने लगे। फिर उन्होंने पेज दर पेज बच्चों से बातचीत करते हुई मसलन आगे क्या होगा–आगे क्या होगा? इस तरह पूरी कहानी पढ़ी। अंत में प्रमोद, कहानी जहां खत्म होती है वहां से कुछ आगे छलक गए कि फिर "सारा गांव यही गीत गाने लगा" इस दौरान हर बच्चा कहानी के साथ जुड़ा रहा।

अब कहानी पर सवाल या कि त्वरित टिप्पणियां करने की बच्चों की बारी थी। प्रमोद ने सवाल किया कि कहानी कैसी लगी। बच्चे बोले कि "कहानी बहुत ही अच्छी थी" प्रमोद ने अगला सवाल किया कि समझ में आ गयी तो सुना दें। आश्चर्य कि हर बच्चे को कहानी शदशः तो नहीं पर उसका सार मालुम था और सुना भी दिया। एक बच्चे ने कहा कि एक ही गीत गाते–गाते गांव के लोग बोर नहीं हो गए होंगे? दूसरे ने कहा कि "चोर बिना कुछ चोरे क्यों भाग गए होंगे?" कुछ बच्चो के उत्तर में आया कि वे बहुत ही डर गए होंगे। तीसरे ने कहा कि "औरत का पति क्यों नहीं जाग पाया वह चोरों को पकड़ लेता और पुलिस को दे देता।" उसके मन में यह कसक सी ठहर गयी थी कि चोर पकडे जाने चाहिए थे। कुछ बच्चों ने कहा कि वह दिन भर गीत खोजते–खोजते थक गया होगा तो गहरी नींद आ सकती है। एक सवाल आया कि औरत को चोरों के खोदने की आवाज क्यों नहीं आयी होगी। इसके उत्तर भी बच्चों से ही आये कि वह तो चक्की पिस रही थी और गाने में मस्त थी। एक सवाल था कि पति को जो पांच रुपये दिए गए थे उसका क्या हुआ? तो उत्तर आया कि उसने अपनी पत्नी को लौटा दिए होंगे। इतने में एक छोटा ब्रेक हुआ तो बच्चे भी बहर जाते समय बड़े उत्साह से वही गीत जोर–जोर से बोल रहे थे। बाहर निकलते समय एक बच्चे ने धीरे से कहा कि पति सी. डी. की दूकान पर नहीं गया वहां गीत मिल सकते थे। इस तरह यह महसूस किया जा सकता है कि ऐसी कहानियां बच्चों को सोचने व बातचीत करने की अथाह संभावनाए खोलती है जिससे भाषाई उद्देश्य तो पूरे होते ही हैं और भी बहुत से कौशल मजबूत होते हैं मसलन कल्पना करना, सोचना, अभिव्यक्ति, तर्क, कहानी की संरचना इत्यादि।

प्रमोद के प्लान का अगला पार्ट यह था कि बच्चों से कुछ बातचीत इस सवाल पर करेंगे कि "गीत कैसे बनते हैं? इनके बनाने में देखने सोचने की क्या भूमिका होती है? आपको कोई गीत आते हैं तो वह सुनाएं व लिख भी दें। आस पास जो गीत गए जाते हैं वह पता करके आयें और जो लिख सकते हैं वह लिख भी लें। वह गीत हम स्कूल में रख लेंगे और बाल अखबार में भी लिखकर दीवार पर लगा देंगे। इसके बाद उनके लिखने व रचना में जो वर्तनी की गलतियां होंगी उस पर भी ध्यानाकर्षण किया जायेगा। जो नए शब्द आये हैं या आयेंगे उसकी सूची बनाई जायेगी ताकि सभी बच्चे समझ सकें। इसके अलावा हमारे यहां इस तरह कि कोई कहानी हैं क्या? उनको भी कक्षा में सुना–सुनाया जायेगा और लिख लिया जायेगा ताकि फिर इसी तरह काम में ले सकें।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उत्तरकाशी से जुड़े हैं)